Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIII (53), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धांत

डॉ. माया रावत*

* सहायक प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय आदर्श महाविद्यालय, हरदा (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – जॉन रॉल्स 20वीं शताब्दी के प्रमुख राजनीतिक दार्शनिकों में से एक थे। उनकी प्रसिद्ध कृति A Theory of Justice में प्रतिपादित 'न्याय को निष्पक्षता के रूप में' की अवधारणा ने समकालीन राजनीतिक दर्शन को गहराई से प्रभावित किया। प्रस्तुत शोध-पत्र में रॉल्स के न्याय सिद्धांत की मूल अवधारणाओंकृमूल स्थिति अज्ञान का आवरण समान स्वतंत्रता का सिद्धांत तथा अंतर सिद्धांत का विश्लेषण किया गया है। साथ ही उपयोगितावाद की आलोचना, सिद्धांत की प्रासंगिकता एवं प्रमुख आलोचनाओं का विवेचन भी किया गया है। यह अध्ययन दर्शाता है कि रॉल्स का सिद्धांत आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में सामाजिक न्याय के लिए एक सुदृढ़ नैतिक आधार प्रदान करता है।

शब्द कुंजी – न्याय को निष्पक्षता के रूप में, मूल स्थिति, अज्ञान का आवरण, समान स्वतंत्रता का सिद्धांत, अंतर सिद्धांत, अवसर की निष्पक्ष समानता, प्राथमिक वस्तुएँ, सामाजिक अनुबंध सिद्धांत, उपयोगितावाद, सामाजिक, न्याय, कल्याणकारी राज्य, राजनीतिक उदारवाद।

प्रस्तावना – राजनीतिक दर्शन के इतिहास में न्याय (Justice) की अवधारणा सदैव केंद्रीय विषय रही है। प्राचीन ग्रीक चिंतन से लेकर आधुनिक उदारवादी परंपरा तक, न्याय को राज्य और समाज की वैधता का मूल आधार माना गया है। आधुनिक युग में औद्योगिकीकरण, पूँजीवाद, लोकतंत्र और मानवाधिकारों के उदय के साथ न्याय की समस्या और अधिक जटिल हो गई। सामाजिक-आर्थिक असमानताओं, अवसरों की विषमता, तथा बहुलतावादी समाजों में मूल्य-संघर्षों ने यह प्रश्न तीव्र किया कि एक न्यायपूर्ण समाज की संरचना कैसी होनी चाहिए। इसी बौद्धिक परिप्रेक्ष्य में John Rawls का न्याय सिद्धांत 20वीं शताब्दी में एक महत्त्वपूर्ण मोड़ के रूप में सामने आया।

रॉल्स की प्रसिद्ध कृति A Theory of Justice (1971) ने राजनीतिक दर्शन में प्रचलित उपयोगितावादी दृष्टिकोण को गंभीर चुनौती दी। उपयोगितावाद 'अधिकतम लोगों के अधिकतम सुख' को न्याय का आधार मानता था, किंतु रॉल्स के अनुसार यह दृष्टिकोण अल्पसंख्यकों के अधिकारों की उपेक्षा कर सकता है। रॉल्स ने तर्क दिया कि न्याय का सिद्धांत ऐसा होना चाहिए जो प्रत्येक व्यक्ति की स्वतंत्रता और गरिमा की रक्षा करे, चाहे वह समाज के किसी भी वर्ग से संबंधित क्यों न हो। इस प्रकार उन्होंने न्याय को 'निष्पक्षता के रूप में' पुनर्परिभाषित किया।

रॉल्स का चिंतन सामाजिक अनुबंध की परंपरा से प्रेरित है, जिसका विकास Thomas Hobbes, John Locke और Jean-Jacques Rousseau जैसे दार्शनिकों ने किया था। किंतु रॉल्स ने इस परंपरा को एक नई नैतिक ऊँचाई प्रदान की। उन्होंने 'मूल स्थिति' और 'अज्ञान का आवरण' (Veil of Ignorance) जैसी काल्पनिक अवधारणाओं के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि यदि व्यक्ति निष्पक्ष परिस्थिति में न्याय के सिद्धांतों का चयन करें, तो वे किन सिद्धांतों को स्वीकार करेंगे। यह पद्धति न्याय के सिद्धांतों को पक्षपात-रहित और सार्वभौमिक बनाने का प्रयास है।

रॉल्स का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक चिंतन प्रस्तुत करना नहीं था, बल्कि एक ऐसे व्यावहारिक ढाँचे की स्थापना करना था जो आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में लागू हो सके। उन्होंने समान मौलिक स्वतंत्रताओं, अवसर की निष्पक्ष समानता और सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के नैतिक औचित्य पर बल दिया। उनके अनुसार समाज में असमानताएँ पूर्णत: समाप्त करना आवश्यक नहीं है, किंतु वे तभी स्वीकार्य हैं जब वे समाज के सबसे कमजोर वर्ग के हित में हों। इस विचार ने कल्याणकारी राज्य की नीतियों को दार्शनिक आधार प्रदान किया।

रॉल्स की दूसरी प्रमुख कृति Political Liberalism(1993) में उन्होंने बहुलतावादी समाजों में न्याय के सिद्धांतों की स्थिरता पर विचार किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि विविध धार्मिक, नैतिक और दार्शनिक मान्यताओं वाले समाज में भी कुछ बुनियादी राजनीतिक सिद्धांतों पर सहमति संभव है। इस प्रकार रॉल्स का चिंतन केवल न्याय की सैद्धांतिक व्याख्या तक सीमित नहीं है, बल्कि वह आधुनिक लोकतंत्र की स्थिरता और वैधता के प्रश्नों से भी जुड़ा हुआ है।

समकालीन वैश्विक परिदृश्य में, जहाँ आर्थिक विषमताएँ बढ़ रही हैं, सामाजिक पहचान की राजनीति उभर रही है और मानवाधिकारों पर बहस जारी है, रॉल्स का न्याय सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक प्रतीत होता है। उनका अंतर सिद्धांत विशेष रूप से उन समाजों के लिए मार्गदर्शक है, जहाँ ऐतिहासिक रूप से वंचित वर्गों को समान अवसर प्रदान करने की चुनौती है। भारतीय संदर्भ में भी सामाजिक न्याय, आरक्षण नीति, तथा समान अधिकारों की संवैधानिक व्यवस्था को रॉल्स के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।

अत: प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य रॉल्स के न्याय सिद्धांत का समग्र एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इसमें उनके सिद्धांत की मूल अवधारणाओं, सिद्धांतों की संरचना, उपयोगितावाद की आलोचना, समकालीन प्रासंगिकता तथा प्रमुख आलोचनाओं का विस्तृत विवेचन किया

जाएगा। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा कि रॉल्स का न्याय सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक दर्शन में क्यों एक मील का पत्थर माना जाता है और किस प्रकार वह आज भी सामाजिक न्याय की बहस में केंद्रीय भूमिका निभाता है।

न्याय की संकल्पना – रॉल्स के अनुसार न्याय सामाजिक संस्थाओं का प्रथम गुण है। यदि कोई संस्था अन्यायपूर्ण है, तो उसे सुधारना या समाप्त करना आवश्यक है। उन्होंने न्याय को 'निष्पक्षता' से जोड़ा।

निष्पक्षता का अर्थ है ऐसे सिद्धांतों का चयन जो सभी व्यक्तियों के लिए समान रूप से स्वीकार्य हों। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए रॉल्स ने दो काल्पनिक अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं–

मूल स्थिति, अज्ञान का आवरण

मूल स्थिति – मूल स्थिति एक काल्पनिक अवस्था है, जिसमें समाज के सदस्य न्याय के सिद्धांतों का चयन करते हैं। इस स्थिति में सभी व्यक्ति तर्कसंगत (Rational) एवं स्वहित–प्रेरित होते हैं, किंतु वे समान स्थिति में होते हैं।

यह अवधारणा सामाजिक अनुबंध सिद्धांत से प्रेरित है, परंतु रॉल्स ने इसे अधिक नैतिक और निष्पक्ष आधार प्रदान किया। मूल स्थिति में कोई भी व्यक्ति अपने सामाजिक दर्जे, आर्थिक स्थिति, जाति, धर्म या लिंग के बारे में नहीं जानता।

अज्ञान का आवरण – अज्ञान का आवरण रॉल्स की केंद्रीय अवधारणा है। इसके अंतर्गत व्यक्ति यह नहीं जानते कि वे समाज में किस वर्ग, जाति या लिंग से संबंधित होंगे।

इस अज्ञान के कारण वे ऐसे न्याय सिद्धांतों का चयन करेंगे जो सभी के लिए न्यायपूर्ण हों, क्योंकि उन्हें यह ज्ञात नहीं कि भविष्य में वे स्वयं किस स्थिति में होंगे। इस प्रकार यह व्यवस्था पूर्ण निष्पक्षता सुनिश्चित करती है।

उपयोगितावाद की आलोचना – रॉल्स ने उपयोगितावाद की उस धारणा की आलोचना की कि 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' ही न्याय है। उनके अनुसार यदि बहुसंख्यक के सुख के लिए अल्पसंख्यक के अधिकारों का हनन किया जाए, तो यह अन्यायपूर्ण होगा।

रॉल्स का सिद्धांत व्यक्ति के मौलिक अधिकारों की रक्षा पर बल देता है। वे मानते हैं कि किसी भी व्यक्ति को समाज के समग्र लाभ के लिए साधन के रूप में प्रयोग नहीं किया जा सकता।

आलोचनाएँ

रॉल्स के सिद्धांत की विभिन्न विद्वानों ने आलोचना की – Robert Nozick अपनी पुस्तक Anarchy, State, and Utopia में रॉल्स की पुनर्वितरण (Redistribution) की अवधारणा का विरोध किया।

सामुदायिक विचारकों ने तर्क दिया कि रॉल्स का व्यक्ति अत्यधिक अमूर्त (Abstract) है और सामाजिक संदर्भों से अलग है।

समकालीन प्रासंगिकता – रॉल्स का न्याय सिद्धांत आज के वैश्विक समाज में अत्यंत प्रासंगिक है। आर्थिक असमानताओं, सामाजिक विषमताओं और अवसरों की असमानता के संदर्भ में उनका अंतर सिद्धांत महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है।

लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं में समान अधिकार, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा और स्वास्थ्य की नीतियाँ रॉल्स के सिद्धांत से प्रेरणा लेती हैं। विशेषकर विकासशील देशों में सामाजिक न्याय की नीतियों को नैतिक आधार देने में यह सिद्धांत सहायक सिद्ध होता है।

निष्कर्ष – जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धांत आधुनिक राजनीतिक दर्शन में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। 'न्याय को निष्पक्षता के रूप में' प्रस्तुत करते हुए उन्होंने ऐसी सामाजिक व्यवस्था की कल्पना की, जिसमें समान स्वतंत्रता और सामाजिक–आर्थिक न्याय का संतुलन स्थापित हो।

उनका सिद्धांत उदारवादी लोकतंत्र को नैतिक आधार प्रदान करता है और यह सुनिश्चित करता है कि समाज के सबसे कमजोर वर्गों के हितों की उपेक्षा न हो। यद्यपि इस पर आलोचनाएँ हुई हैं, फिर भी यह सिद्धांत समकालीन राजनीतिक विमर्श में अत्यंत प्रभावशाली और प्रासंगिक बना हुआ है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. Rawls, John. A Theory of Justice. Harvard University Press, 1971.
2. Rawls, John. Political Liberalism. Columbia University Press, 1993.
3. Nozick, Robert. Anarchy, State, and Utopia. Basic Books, 1974.
4. Sandel, Michael J. Liberalism and the Limits of Justice. Cambridge University Press, 1982.
5. दत्त, डी. एम. 'पश्चिमी राजनीतिक दर्शन' साहित्य भवन, आगरा।
6. वर्मा, एस. पी. 'आधुनिक राजनीतिक विचारधाराएँ' राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।

****